द्वितीय अध्याय

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का जीवन परिचय एवं अजराड़ा घराने में आगमन

२-१ जन्मस्थल

२-२ पारिवारिक परिचय

२-३ बाल्यावस्था

२-४ प्राथमिक शालेय शिक्षा

२-५ तबले की प्रारंभिक शिक्षा

२-६ माध्यमिक शिक्षा एवं युवा अवस्था की कुछ अंर्तगत बाते

२-७ सुधीरकुमारजी का उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ से परिचय

२-८ अजराड़ा घराने में उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब का परिचय एवं योगदान

२-९ उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब की सुधीरजी को शिष्य के नाते स्विकृति

२-९-१ अजराड़ा घराने का प्रथम संस्कार

२-९-२ निकास पर दृष्टि

२-९-३ दायें, बायें पर उस्ताद का विशेष ध्यान

२-९-४ तबले की तालीम प्राप्त करने हेतु कठोर तपश्चर्या

२-९-५ सुधीरजी का अजराड़ा घराने में आगमन तथा घराने प्रती विशेष ध्यान

Chapter-2

द्वितीय अध्याय

प्रो. सुधीर कुमार सक्सेना जी का जीवन परिचय एवं अजराडा घरान में आगमन ।

२-१ जन्मस्थल

उत्तर प्रदेश भारत भूमि का हृदय स्थान है। गंगा, जमुना जैसी नदियों ने पूरे उत्तर प्रदेश को पवित्र किया है। यह राम, कृष्ण, लव, कुश तथा उच्च कोटि के संत महात्मा जैसे तुलसीदास, कबीर और कई राजा, महाराजाओं की पवित्र पृष्ठ भूमि के कण कण में भक्ति, साधना, कला इस भावनासे सुगंधित हुई है। इसी पावन भूमि में अलीगढ़ जिंले के बालिपाडा गांव में ई. स. ५-७-१९२३ के रोज प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी का जन्म हुआ। महान कलाकार की संज्ञा देने का कारण ही बतलाता है कि यही कलाकार भविष्य के अजराड़ा के प्रतिभा संपन्न एक सिध्दहस्त कलाकार क्यां होंगे? अपितु आज अजराड़ा घराने पर ध्यान दिया जाय तो यह संज्ञा सार्थक होती है। अर्थात ऐसी महान विभूति का नामकरण करने के बाद इनका नाम सुधीरकुमार रखा गया।

---

७० साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. २७-९-२००५

२-२ पारिवारिक परिचय :

प्रो. सुधीरकुमार सक्सेनाजी के परिवारीक परिचय में केवल सक्सेना परिवार काही परिचय देना यहाँ पर उचीत समझा है, तथा शादी के बाद पत्नी श्रीमती सक्सेना तथा दो बेटीयाँ डॉ.हिना सक्सेना तथा अर्चना सक्सेना का परिचय गुजरात के आगमन के बाद ही देना उचित समझा है।

सुधीरजी की माता का नाम कृष्णकुमारी था और पिता का नाम सदानंद था। पिता व्यवसाय से शिक्षक थे और "जलाल" नामसे शायरी लिखते थे। माता उस जमाने में गाजियाबाद की प्रथम महिला काउन्सलर थी। घर में माता,पिता के अलावा भाई बहेनो में सुधीरजी द्वितीय पुत्र थे। चार भाईओं के नाम एस.के.सक्सेना के नाम से जाने जाते थे। सबसे बडे भाई पद्मभूषण डॉ.सुशीलकुमार जो दिल्ली युनिवर्सिटी में फिलॉसॉफी डिपार्टमेंट (दर्षन विभाग) में प्राध्यापक थे। संगीत,नाटक अकादमी दिल्ली द्वारा "फेलोशीप"से सन्मानित, ऐस्थेटिक्स - मीमांसा के विश्वविख्यात विद्वान। दुसरा क्रम सुधीरजी का, बाद में शीला सक्सेना जो एम.ए.विथ फिलॉसॉफी और दिल्ली के स्कूल में आचार्य पद पर से निवृत्त हैं। आपके पति का नाम श्री मदनमोहनजी था। आपने बनारस विश्वविद्यालय से "ग्लास टेकनोलॉजिस्ट" की उपाधि प्राप्त की थी। चौथे क्रम पर सुरेन्द्रकुमार विद्यार्थी कालसे हॉलैंड,स्वीडन,लंडन में रहे। अन्त में कॅनडा स्थायी हुए। आपने

अर्थशास्त्र में पी.एच.डी.की उपाधि ली थी और सहकारी क्षेत्र प्रवृत्ति के विश्वविख्यात विद्वान थे। दोनो बहनें प्रमिला सक्सेना जिनके पति दिलीपसिंहजी रक्षा विभाग में उच्चपद पर थे और निर्मला जिनके पति राजश्री प्रोडक्शन के जानेमाने पब्लिसिटी ऑफिसर थे। उनका नाम जोगेन्द्रसिंह था और पुत्र का नाम शैलेन्द्रसिंह है। सबसे छोटे सत्येन्द्रकुमार मुंबई के प्रख्यात हाईस्कूल लिग्रेन्ड में हिन्दी भाषा के शिक्षक, लेखक कवि के साथ साथ एक अच्छे शिल्पकार भी थे। सभी भाई बहनें अपने अपने क्षेत्र में प्रबुध्द थे। समग्र कुटुंब पर माँ सरस्वती देवी की अद्भुत कृपा दृष्टि थी, और सभी सदस्य अपने क्षेत्र में उच्च पद पर रहे। बचपन में पिताजी की अल्प आमदनी पर पूरा घर चलता था। किन्तु सादगीपूर्ण जीवन जीने की आदत से सभी ने अपना अपना कर्तव्य पूरी तरह से निभाया। किन्तु शिक्षित कायस्थ कुटुंब प्रगतिशील, विचारधारा होने के कारण घरमें मुक्त वातावरण था। इसलिये तन, मन, शक्ति का भली भाँति विकास हुआ। सुधीरजी को घर में 'सुध्दिदादा' कह कर बुलाते थे। घर में संगीत का माहौल था। पिताजी संवादिनी बजाते थे। माता भजन गाती थीं। उन्होंने एक छोटीसी भजनावली पुस्तिका लिखी थी। उसी पुस्तिका को सुधीरजी मेले में भजन गा कर बेचते थे उसकी कीमंत एक आना थी। इसी तरह सादगीभर जिवन था।

---

७० साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. २७-९-२००५

२-३ बाल्यावस्था :

प्रो.सुधीरकुमारजी के जीवन पर दृष्टिपात करे तो यह तथ्य सामने आता है कि इनके पिता पर इन सभी बालकों का बोझ होने के कारण इनका जीवन कठिनाइयों में व्यतीत हुआ, इसीलिए स्वयं के कष्ट से विद्या प्राप्ति करना ही उचित रहा होगा तथा यही माता,पिता के संस्कार सुधीरजीको एक आदर्श व्यक्तित्व प्राप्त करने में मदतरूप बने है। बाल्यावस्था की ओर यदि और दृष्टिपात करे तो हर बालक का जीवन कुछ अलग,अलग लीलाओं में व्यस्त रहता है। किन्तु सुधीरजी का जीवन थोड़ासा हटकर रहा है। कहने का तात्पर्य इतना ही है कि उन सभी लीलाओं से हटकर इनकी लीला एक प्रतिभा संपन्न कलाकार की रही है। अपितु वह एक संकेत रहा है।

२-४ प्राथमिक शिक्षा स्थिति :

आधुनिक युग के बच्चों की शिक्षा पर दृष्टिपात करें तो आज का बच्चा तीन साल की उम्र मे ही स्कूल में भर्ती होता है, किंतु सुधीरकुमारजी के समय न इस प्रकार भर्ती कराने वाली स्कूल थी न कोई आधुनिक युग के माता,पिता थे। बचपन में खेलना,कूदना इसी पर ध्यान केन्द्रित था। परन्तु

---

७१ साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. २५-१०-२००५

ये बातें कुछ समय तक ही सीमित रहीं हैं इस सात साल के नन्हे बच्चे को स्कूल में भर्ती कर दिया और उसी दिन से शिक्षा का प्रारंभ हुआ, अर्थात बारह साल की उम्र में ही परिवर्तन शीलता के संस्कार दिखाई देने लगे, और ये संस्कार थे संगीत में रुचि पैदा होने के काण बारा साल की उम्र में उस्ताद बुन्दु खाँ से तालीम शुरु हुई।

२-५ तबले की प्रारंभिक शिक्षा :

बचपन से हरेक घरके सभी बच्चे घर में मेज पर खाली डिब्बों पर हाथ से तबला बजाने की कोशिश करते है। इसी तरह सुधीरजी भी बजाते थे। किंतु सभी बच्चे तो तबला वादक नहीं बनते। परंतु ईश्वरी कृपा से यह छोटीसी आदत एक आशीर्वाद के रूप में साकार हुई। इन्हीं के रिश्तो में से इनके चचेरे भाई ने अपनी तबले की जोड़ उन्हें दे कर विदेश चले गये। फिर क्या दिनके तीनों प्रहर सुधीरजी तबला बजाया करते थे। यह देखकर पिताजी ने उसी गाँव के तबला मास्तर "बुन्दुखाँ" के पास तबला सीखने के लिये भेजा और तबले की प्रारंभिक शिक्षा शुरु हुई। बुन्दुखाँ भी अजराड़ा घराने के ही थे। उस जमाने मे गाना बजाना यह बात सुसंस्कृत घराने मे वर्ज्य मानी जाती थी। परंतु बच्चे की जिज्ञासा देखकर पिताजीने उस जमाने मे यह कदम उठाया कि बच्चे को तबला सिखाने के लिये मास्टर रखा।

---

७२ साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. ३०-१०-२००५

समाज में संगीत के प्रति जो तिरस्कारी भावना,उस तिरस्कार की भावना को समाप्त कर अपना कर्तव्य समझकर पिताजी ने अपने बच्चे को तबले कि शिक्षा ग्रहण करने और साथ साथ स्कूलकी शिक्षा पाने मे कोई कमी नही रखी। शिक्षा को प्रथम लक्ष्य के रूप मे रखा, अर्थात पढाई पहले, बादमें तबला। एक बार स्कुल मे गाना,तबला वादन की प्रतियोगिता रखी थी तब स्कूल में तबला वादन प्रतियोगिता में सुधीरजी ने भाग लिया था। परीक्षक के तौर पर हबीबुद्दीनखाँ साहब थे। उन्होंने सुधीरजी का तबला सुना। इस कार्यक्रम में उसी गाँव के बनिया बनवारीलालजी थे। उनका अनाज का व्यापार था। किन्तु उनको तबले की जानकारी थी उन्होंने हबीबुद्दीखाँ के पिताजी से तबला सीखा था। जब सुधीरजीका तबला वादन सुनने के बाद उस्ताद हबीबुद्दीनखाँ साहबने बनवारीलाल को बुलाकर कहा कि अभी जिसने तबला बजाया उनका नाम क्या है? उन्होने कहा कि हमारे स्कूलके प्रिन्सिपल का लड़का सुधीरकुमार सक्सेना है। उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ ने कहा "उसे शामको मेरा तबला सुनने के लिये ले आना"। बनवारीलाल ने सुधीर से कहा "आज एक उस्ताद का तबला सुनने जाना है"। उसी शामको जिंदगी में पहला तबला वादन का कार्यक्रम सुनने का अवसर सुधीरजी को प्राप्त हुआ। और देखा कि सुबह जो परीक्षक थे उनका ही कार्यक्रम था। पहली बार किसीका तबला वादन सुना और तभीसे मनोमन तय किया की यदी तबला सीखना है तो उस्ताद के पास ही।

किन्तु ईश्वरी संकेत ही मानिये कि बनवारीलाल सुधीरजी को मिलवाने के लिये उस्ताद के पास ले गये और उस्ताद ने पूछा, " क्यों बेटे, हमारे पास तबला सिखोगे?" उसी समय सुधीरजी को लगा कि क्या यह आकाशवाणी तो नहीं हो रही है ? उन्हों ने तुरंत "हाँ"कह दी और बाद में पिताजी की अनुमति ली। पिता के हाँ कहने पर शिक्षाका प्रारंभ हुआ।

---

७३ साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. १५-११-२००५

२-६ माध्यमिक शिक्षा एवं युवा अवस्था की कुछ अंतरंग बातें :

इसी दरम्यान प्राथमिक शिक्षा समाप्त कर सुधीरजी को हाइस्कूल की पढाई करने के लिये मेरठ शहर मे जाना पडा। पिताने एक होस्टेल में रहने का इन्तज़ाम किया। साथ साथ माध्यमिक शिक्षा का आरंभ हुआ। सुधीरजी के जमाने में एक बात आवश्यक थी कि पढाई लिखाई के साथ साथ शारीरीक व्यायाम पर भी ध्यान दिया जाता था। इसी कारण वश सुबह ऊठकर अखाड़े में जाकर कसरत करना ही जीवन का लक्ष्य रहा। जीवन निर्वाह के लिये पिताजी मासिक तीस रूपये देते थे। इसमें से स्कूल की फीस,खाने पीने के लिए खर्च किया करते थे। यह समय ऐसा था कि जब बाल्यावस्था का अंतिम चरण समाप्त हो रहा था और यौवन में पदार्पण कर रहे थे। यह समय १९४० का था, शरीर व्यायाम करने से हृष्टपुष्ट हो रहा था। व्यायाम करने से भूख भी ज्यादा लगती थी। उस जमाने मे नाश्ता करने की कीमंत दो रूपया थी। और वह भी सुबह के नाश्ते में दूध,जलेबी, और स्वादिष्ट खाना मिलता था। साथही माध्यमिक शिक्षाकी पढ़ाई हो रही थी। तबले का रियाज़ तो चलता ही था। इसी लीये उस्ताद सुबह होस्टल पर सीखाँ ने जाते थे याने उनका नास्ता भी उन्हीं के घर पर ही होता था। अपनी कम आमदानी में स्वयं जीवन चलाना तथा उस्ताद का भी बोझ उठाना यह उनकी एक अग्नि परीक्षा ही थी किंतु उस में भी वह सफल रहे। तबले का रियाज़

तो चलता ही था। अपने उत्तर भारतीय संगीत में एक बात तो सच है कि यह संगीत जब मुस्लिम लोंगो के हाथ में चला गया और उस्ताद लोग अपना संगीत किसीको सिखाते नहीं थे और सिखाते थे उसका मुआवज़ा लेकर और कड़ी मेहनत यानी शारीरिक मानसिक और कष्टदायक रीति से सिखाते थे। उदाहरण के साथ संगीत विधा में भास्करराव बखले, पं.भातखंडे इत्यादी यह काल १८०० सन का था। किन्तु कालचक्र की परिस्थिति के अनुसार इसमे भी परिवर्तन होता रहा। इस परिवर्तन में सुधीरजी को ईश्वरी कृपा से सामने से उस्ताद हब्बीबुद्दीनखाँ जैसे गुरु मिले। उस्ताद हब्बीबुद्दीनखाँ साहब भी मेरठ मे रहते थे और वे भी अजराड़ा घराने के से ताल्लुक रखते थे। उनकी वादन शैली का प्रभाव ही ऐसा था कि पूरे हिन्दुस्तान में तबले के घरानों में इनका नाम आदरपूर्वक लिया जाता था। उनकी वादन शैली ही ऐसी थी कि तबले के बोल,कायदा,रेले तुकड़े का निकास इतना साफ़ सुथरा और बेजोड़ था। ऐसे महान उस्ताद सुधीरजी को होस्टेल मे आकर सिखाते थे। जब गुरु घर पर आकर सिखाये यानी सोने पे सुहागा। किन्तु हिन्दुस्तान में सबको पता है कि गुरु की तुलना माता-पिता और ईश्वर के साथ ही होती है। इसी लिये उस्ताद सुबह सिखाने आते थे यानी उनका नास्ता उनके घर पर ही होता था। यानी पहले खुदका जीवननिर्वाह बड़ी मुसीबत से और वह भी अब दोनो का खर्चा। पिताजी मासिक ३० रुपये भेजते थे उसमें सुबह के

नाश्ते के खर्च में पूरे होते थे। उम्र बढ रही थी, वर्जिश भी चल रही थी, भूख भी बढ रही थी। इसके लिये सब पैसा खर्च होने लगा। सुधीरजी ने सुबह का नाश्ता करना बंद किया और एक वक्त का खाना खाने लगे। किन्तु इस तरह की अपनी खुद की समस्या मान कर भूखे रह कर तबला सीखने मे कुछ कमी नहीं रखी। अब सुधीरजी मेट्रिक की कक्षा में आये। मित्र परिवार को यह पता था कि सुधीर किस तरह से अपना जीवननिर्वाह कर रहे है। उनको हर तरह की मदद करने के लिये वे तैयार थे। किन्तु सुधीरजी स्वाभिमानी विचारों वाले थे और उन्होनें किसीका ऐहसान नही लिया, भूखे रहकर भी अपनी पढाई में कोई कमी नही आने दी और नहीं तबले के शिक्षा मे कोई कमी आने दी। ऐसा करते करते सुधीरजी मेट्रिक पास हुऐ। इस के बाद कॉलेज मे दाखिल हुऐ। अब तो खर्चा और भी बढ़ गया था। इसके लिये सुधीरजी ने तबले की शिक्षा देने का कार्य शुरु किया और साथ संगत करना भी शुरु किया। इस कारण सुधीरजी गायन, वादन, नृत्य के साथ संगत की शिक्षा मे माहिर हुऐ। और आर्थिक समस्या का भार थोड़ासा हलका हुआ। जब उस्ताद सिखाने आते थे तब सुधीरजी कभी कभी सोनेका बहाना करते थे और उस्ताद को कहते थे, " आज में थक गया हुँ, आप ही बजाइये"। और उस्ताद बजाते तब कायदे का और बोलोका निकास कैसे करना चाहिये उसपर ध्यान देते थे। कभी कभी उस्ताद कहते थे कि

'क्या यह कायदा आता है'? तब सुधीरजी कहते थे "नही आता है", उसे दुबारा सुनकर लिख लेते थे। पहले उस्ताद लोग लिखने पर ध्यान नही देते थे, वे अपने शिष्यो को कभी भी सिखाते थे अर्थात शिष्यको उसे याद ही रखना पड़ता था वह याद रखे तो ठीक वरना उसे भूल जाओ। इसका कारण यह था कि उस समय के सभी उस्ताद शिक्षित नहीं थे। किन्तु उन्हें ईश्वर का आशीर्वाद था, जिससे वे स्वयं ही अविष्कार करते थे। सभी संगीत विधाओं में ऐसा ही चलता था। गुरु शिष्य परंपरा जब तक चली तब तक सही था, किन्तु कालान्तर से यह नष्ट होने लगी और संगीत के लिये खतरासा हो गया। किन्तु सुधीरजी ने यह बात ठान ली और सभी क्रियात्मक चीजों को लिखकर इकठ्ठा किया। समाज जानता है कि संगीत के जानकार उस्ताद खुदको मस्तमौला समझते है और अपने खयालों में रहते थे। इसमें ऊस्ताद हबीब्बुद्दीन खाँ साहब भी इससे जुदा न थे। जब कभी ऊस्ताद का कार्यक्रम बाहर गाँव होता था तब नगमे पर उनको सुधीर बाबु साथ दिया करते थे उनको दूसरा नगमा बजानेवाला नही चलता था क्योकि उनका बजाना इतना कठिन था कि उसमें वो जो लयकारी करते थे कि नगमा बजानेवाला तबला सुनने लगता था और इतना बजाना भी आसान नहीं होता था। क्योंकि बजाते समय उसमे आड, कुआड, बिआड का चलन लयकारी के साथ होता था यानी जिसे अजराड़ा घराने का तबला आता हो उसे ही नगमां

बजाना आसान होता था। इसी कारण सुधीरजी को उस्ताद ले जाते थे। और भी एक स्वार्थ उस्ताद का होता था कि जब भी उन्हें शराब चाहिये होती थी, तब उसका बन्दोबस्त सुधीरजी करते थे यानी उनको शराबख़ाने पर ले जाना, रास्ते मे सिगरेट जलाकर देना इत्यादि। एक बात तो सत्य है कि सुधीरजी को न तो शराब का व्यसन था न सिगरेट का, किन्तु गुरु भक्ति और एक ही लगन थी सिर्फ तबला सीखना। आम समाज जिसे तिरस्कार के रुप मे देखता था, उच्चवर्गीय लोगों को जो वर्ज्य था वहाँ भी सुधीरजी उस्ताद के साथ जाते थे। न कभी उन्होने समाजकी परवाह की या घरकी, सिर्फ गुरु के पास तबला सीखना यह एक ही कर्तव्य समझकर अपना कार्य करते थे। साथ साथ अपनी पढ़ाई पर ध्यान देते हुए मेरठ युनिवर्सिटीसे बीं.ए .(इग्लिश) के साथ अपना ग्रॅज्युऐशन पूरा किया, और साथ में पोलिटिकल सायन्स, और फिलाँसाँफी विषयों के साथ पास किया। माँ सरस्वती की असीम कृपासे यह साध्य हुआ। एक बात तो निश्चित है कि उस जमाने में संगीत क्षेत्र में महाविद्यालय का पदवीधर हो ऐसे बहुत कम कलाकार पैदा हुऐ। उनमें सुधीरजी का नाम आता है। अपने मध्यम परिवार के घरों में एक रुढ़ि सी थी कि पढाई हो जाने पर नौकरी करना और माता, पिता को घर चलाने में मदत करना। इस परम्परा का निर्वाह सुधीरजी ने भी किया और नोकरी की तलाश में उनको कलकत्ता में एक फॅक्टरी में क्लर्क की नौकरी

मिली। सुधीरजी ने कलकत्ता जा कर नौकरी स्वीकार कर ली। पर क्या किसी कलाकार का मन ऐसी नौकरी करने में लगेगा? इसलिए बाकी के समय में तबले का रियाज़ करते थे, उसके साथ साथ ट्यूशन भी करते थे। अचानक एक दिन ऑल इंडिया रेडियो पर श्रीमती गंगुबाई हंगलजी का कार्यक्रम तय हुआ था और अचानक सुधीरजी की मुलाकात उनसे हुई। उन्होने अपने साथ बजाने का उन्हें न्यौता दिया और सुबह के कार्यक्रम में इन्होंने गंगुबाई के साथ बजाया। नौकरी करने के पहले उन्होंने काफी कलाकारो के साथ आकाशवाणी पर बजाया था। किन्तु कर्मधर्म संयोग से यह कार्यक्रम उनके मालिक ने सुना और दूसरे दिन मालिक का बुलावा आया। उन्हों ने कहा " नियमानुसार आप दो जगह पर नौकरी नही कर सकते"। तब सुधीरजी ने क्लर्क की नौकरी छोड़कर आकाशवाणी में बजाना शुरू किया। आकाशवाणी के स्टाफ आर्टिस्ट की हैसियत से कलकत्ता आकाशवाणी पर नौकरी शुरू की। उसके बाद दिल्ली आकाशवाणी पर उनकी नियुक्ती हुई। सुधीरजी जब 'आकाशवाणी'में नियुक्ती हुई। तब उनके पास से सौगंदनामा (करार पत्र) लिखा लिया था। जब सुधीरजी ने आकाशवाणी की नौकरी पर पद त्याग की बात स्टेशन डायरेक्टर को बताई तब उन्होने कहा कि आपने कान्ट्रॅक्ट किया है कि आप अपने पद से त्याग पत्र नही दे सकते। इसलिये पद का त्याग पत्र अस्वीकार करते हैं। किन्तु जब सुधीरजी

ने कहा कि मुझे कान्ट्रॅक्ट की कॉपी पढ़ाइये तो कार्यालय द्वारा आनाकानी की जाने लगी। अंत मे सर ने उसे पढ़ा और स्टेशन डायरेक्टर को कहा ऐसा कहा लिखा है? मैं भी पढ़ा लिखा इन्सान हूँ सिर्फ तबला नही बजाता हूँ। इस बात से पृष्टिकरण मिलता है कि कलाकार को भी पढ़ना अत्यंत आवश्यक है।

उपर दि गई सारी बाते एक अंतरगत बातों के रुप में लि गई है ।

---

७४ साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. २९-११-२००५

२ -७ सुधीरकुमार सक्सेनाजी का उ हबीबुद्दीन खाँ साहब से परिचय :

श्री बनवारीलालजी के कहने से अजराड़ा घराने के मरहुम उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब का तबला सुनने के बाद तबले की शिक्षा के प्रति मन में भ्रांतियाँ उत्पन्न हुई। किंतु जन्म संगीत प्रेमी परिवार में होने के कारण और घर में सभी सदस्यो का सहयोग होने के कारण प्रो सुधीरकुमारजी का संतुलन चलित नही हुआ किंतु अपनी सांगितीक शिक्षा क्यों न खाँ साहबसे प्राप्त की जाय इस पर मुहर लगाते उन्होंने मन में ठान ली कि वे मेरे गुरु होने के पात्र हैं। केवल इस में ही संतोष न मानकर इसकी पूर्ती कैसी होगी इस पर मन में फिरसे शंका पैदा हुई। परंतु मन में जब एक बार ठान ही लिया था कि मुझे उस्ताद से ही तबला सीखना है तो क्यों न इनसे परिचय किया जाय? इसी कारण सामने से उस्ताद से परिचय करना उचित समझा तथा आखिर केवल परिचय न करते हुऐ शिष्यत्व प्राप्त करने का मन में ठान लीया। परंतु शोधकर्ता ने सक्सेना साहब से जब इस विषय पर साक्षात्कार किया तो कुछ तथ्य ऐसे सामने आये जो शिष्यत्व प्राप्त करने विपरित थे। परंतु समाज के कुछ लोंग ऐसा भी चाहते थे कि उस्ताद इस कायस्थ ब्राह्मण को तबले की शिक्षा न दे। परंतु समाज की ओर अपना ध्यान न देते केवल तबले की शिक्षा प्राप्त करना इस पर मन केन्द्रित करते हुए उस्ताद का

शिष्यत्व प्राप्त करने की इस महान कलाकार ने ठान ही ली। इस प्रकार कुछ कठिनाईयो का सामना करते हुए प्रो .सुधीरकुमारजी का उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहबसे परिचय हो ही गया। यह उनके लिये एक सौभाग्य की बात थी।

७५ साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. २९-११-२००५

२-८ अजराड़ा घराने में हबीबुद्दीन खाँ का परिचय एवं योगदान :

तबला वाद्य के जितने भी घराने है, हर एक घराने में एक ऐसा तबला वादक पैदा हुआ है जिसने अपने घराने को विश्व के पटल पर रख दिया। हरेक तबला वादक तबले के वादन पर अपना आधिपत्य रखते थे। ऐसे ही एक तबला वादक जो अजराड़ा घराने से ताल्लुक रखते थे और अजराड़ा घराने की शान, बान थे, हिन्दुस्तानी संगीत की दुनिया में तबला क्षेत्र में अद्वितीय उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ का नाम अग्रेसर है।

उस्ताद का जन्म १८९९ में मेरठ में हुआ। अपनी बाल्यावस्था में, ही आपने तबले की तालीम अपने वालिद उस्ताद शम्भु खाँ साहब से प्राप्त की। बचपन से ही घरमें तबला होने के कारण रगरग में लय और तबले के बोल एवं संगीत का ज्ञान बचपन से ही आ गया था। अपनी कुशाग्र बुध्दि के कारण उन्होंने बचपन में ही अजराड़ा घराने का तबला आत्मसात किया था और मातृ घराने की जो भी कमियां थी उस पर विचार कर आपने क्रियात्मक रुप में उसे सुधार कर, नया विचार देकर तबला क्षेत्र में तहलका मचा दिया। इस के लिये आपने दिल्ली घराने के तबला प्रतिभावान तबलानवाज उस्ताद नथ्थु खाँ को गुरु बनाकर उनसे गंडा बँधवा कर शिष्यत्व प्राप्त किया था और दिल्ली घराने का तबला आत्मसात किया। इसका आप के वादन कौशल्य पर

एक गहर असर दिखाई देता था। इस लिये हबीबुद्दीन खाँ साहब का वादन अत्यंत सुंदर, मधुर एवं प्रभावशाली बन गया। आपने तबला वाद्य के दोनो अंगो पर बहुत ही आसानीसे प्रभुत्व प्राप्त किया। इस कारण बंदिशो का निकास हर लय में किस हिसाबसे करना है, इसका अभ्यास संपूर्ण शास्त्रोक्त रुप से कर आप आसानीसे हर लय में बजाकर उसका स्पष्ट रुप दिखाते थे। अति द्रुत लय में गत एवं बंदिश इस प्रकार से आप उनका निकास करते थे कि सुनने वाले दाँतों तले उँगलिया दबा लेते थे। खाँ साहबने बाँये पर ऐसी हुकुमत कायम की थी। बाँये के बोल जब बजाते थे तब ऐसा सुनाई पड़ता था मानो दो कबूतर आपस में बातचीत कर रहे हें। ऐसा आभास उत्पन्न करते थे। इस तरह आप अजराड़ा एवं दिल्ली घराने का तबला ऐसी खूब सुरतीसे बजाते थे कि आपने उस पर प्रभूत्व प्राप्त किया हो। अजराड़ा घराने में अधिकतर तिस्त्र जातिका उपयोग याने आड का प्रयोग किया जाता है। तब आप पहले तिस्त्र जाति, बादमें उसी कायदे को सीधी लय में बजाकर पहले की लय को दुगना, चौगना करते थे। आप लंबे यानी बडे कायदे आसानीसे बजाते थे। कायदे की सीधी लय करते समय आडी कायदे को तेरहवी मात्रा से उठाना यह आपके वादन का विशेष गुण रहा है। मुश्किल बंदिशो को

आसान बनाकर द्रुत गति में साफ सुथरा बजाना आप के बाँये हाथ का खेल था।

आप ज्यादातर द्रुत गति में तबला बजाना पसंद करते थे। दिल्ली का तबला जो मध्यम लय का माना जाता है उसे आपने द्रुत लय में बजाकर आप एक सिध्दहस्त कलाकार हुऐ। खाँ साहब धीरधीर जो खुल्ले हाथ से यानी हथेली से बजाते है उसे बंद मुठ्ठी का धीरधीर प्रचलित किया और उसे आप अति द्रृत लय में बजाते थे। कहा जाता है कि कोलकत्ता में एक कॉन्फरन्स में एक कलाकार ने धीरधीर ऐसी तैयारी के साथ बजाया था। तभी आपने मनोमन ठानली की आज श्रोतागण को कुछ अलग सुनायेंगे और खुलेआम आपने ऐलान किया कि आज तक गद्दी का धीरधीर सुना, अब आज हम मुठ्ठी का धीर धीर सुनायेंगे और जनसमुदाय के सामने बंद मुठ्ठी से धीरधीर बजाया। इस कारण आप उच्चकोटी के अति लोकप्रिय कलाकार हो गये। खाँ साहब के बारे में उनके पट्टशिष्य सुधीरकुमारजी कहते थे कि उस्ताद का रियाज़ मेरठ जिले के हाकुड गाँव में हुआ। ज्यादातर आप एकांत में रियाज़ करते थे और बडे मुँह का तबला बजाते थे। आपके पिताजी ने आपको अजराड़ा घराने को विकसित करने को तैयार किया था। आप सब लोगो को इकठ्ठा कर मिलजुल कर रहने में मानते थे। आप के मन में जातिपाँति का

कोइ भेदभाव नही था उन्होंने हिंदु लोगो को भी शिष्य बनाये। आपको कबुतर उड़ाने का शौक था और खेलकूद में भी आप दिलचस्पी रखते थे। आप कबी टीम के कप्तान भी थे। सुधीरजी और आगे कहते है कि अजराड़ा घराने को और भी विकसित करने के लिये श्री महेश्वरी दयाल माथुरजी जो सिविल जज थे उन्होंने सन १९३९ में मेरठ मे ही एक कॉन्फरन्स का आयोजन किया था। इस कार्यक्रम में उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ ने अजराड़ा घराने की खास बंदिशे एवं कायदे बजाये थे जिससे लोगों को अजराड़ा घराने की एक अलग सी छाप दिखाई दी। इससे यह देखा जाता है कि खाँ साहब ने न केवल तबला सिखा, लिखा और कंठस्थ किया अपितु इसको सिद्धहस्त भी किया।

खाँ साहब के चचेरे भाई उस्ताद अबदुल करीम खाँ, उस्ताद अजीजुद्दीन खाँ इनके पुत्र आशिक हुसेन खाँ का नाम आदर पूर्वक लिया जाता है। इस प्रकार सन १९४१ में आपने लखनऊ स्थित भातखंडे कॉलेज में अजराडा घराने को घरघर तक पहुँचाने के लिये एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया था जो श्री उमानाथ बालीजी ने आयोजित किया था। इस में उस्ताद ने सोलो वादन किया था। इस कार्यक्रम को सुनते समय लोग लय के साथ झुमते हुऐ दिखाई दिये। लय का एक निराला चमत्कार दिखाकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध

किया था। आपके बजाने की एक और खासियात थी कि जब आप द्रुत गति में बजाते थे तो एकएक शब्द स्पष्ट रुप से सुनाई पड़ता था जैसे कि लिखनेवाले एक एक शब्द लिख सके। इसी साल में इलाहबाद में डाँ. बी आर भट्टाचार्यजी ने एक कार्यक्रम आयोजित किया था। उसमें उस्ताद का सोलो वादन और संगति के कार्यक्रम रखे थे। उस्ताद संगत करने में भी बडे माहिर थे। अथः इस कार्यक्रम में आप को संगत सम्राट की उपाधि प्राप्त हुई।

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ का अजराड़ा घराने को विकसित करने में जो योगदान रहा है वह बेजोड़ है। आपके शिष्यो में पुत्र मंजु खाँ, प्रो. सुधीरकुमार सक्सेना और भतीजे रमजान खाँ के नाम विशेष रुप से लिये जाते है। उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ का तबला वादन १९४० से १९६० तक अपनी चरमसीमा पर था। आपने राष्ट्रीय स्तर पर सभी संगीत सम्मेलनो में तहलका मचा रखा था। कुछ साल बाद आपका स्वास्थ्य गिरता गया और १९६६ में पक्षघात के शिकार हो गये और १९७२ में आपका देहांत हुआ।

---

७६ साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. १५-१२-२००५
७७ संगीत कला विहार पत्रिका डाँ अजय अष्टपुत्रे

२-९ उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब की सुधीरजी को शिष्य के नाते स्वीकृति :

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब से परिचय होने के बाद उनकी मुलाकात एक मुलाकात ही नही रही परंतु रिश्ते में परिवर्तित हुई। अर्थात एक गुरु का शिष्य से तथा एक शिष्य का गुरु से परिचय होने से एक दूसरे से वे परिचित हुए। शोधार्थी का कहने का ताप्तर्य इतना ही है कि प्रो सुधीरकुमारजी से साक्षात्कार होने के बाद यह निष्कर्ष सामने आता है कि सुधीरकुमारजी का तबला वादन खाँ साहब को पसंद आया होगा। फलतः खाँ साहब ने विचार विमर्ष कर सुधीरकुमारजी को शिष्य के नाते स्वीकृत किया। यहाँ प्रो सुधीरकुमारजी से एक ऐतिहासिक घटना घटी जो शोधार्थी को एक साक्षात्कार के रुप में प्राप्त हुई। कई शिष्य उस समय शिष्यत्व ग्रहण करने के लिये आते थे। परंतु किसी को भी शिष्य के नाते स्वीकृत नही किया। सुधीरकुमारजी केवल एक ऐसे शिष्य थे जिन्होने अपने गुरु का ह्रदय जीत लिया। हो सकता है कि इसी कारण उन्हे शिष्य के नाते स्वीकृति दी होगी। केवल स्वीकृति ही नही बल्कि अपने जाति के परिचित लोगों को बुलाकर गंडाबंधन करवाया। तत्पश्चात् सुधीरजी द्वारा दावत दी गयी। आनेवाले आमंत्रित महेमान तो खाना खा कर चले गये। परंतु न तो गुरु ने भोजन किया न तो शिष्य ने क्योंकि यही शिष्य की परीक्षा थी। खाँ साहब सुधीरजी को अपने घर ले गये और एक ही थाली में परोसी हुई रोटी और कटोरी में

रखा हुआ चिकन दोनों ने खाया। सुधीरजी कायस्थ ब्राह्मन होने के नाते मन में अनेक प्रकार की शंका, कुशंका उत्पन्न हुई, किंतु झूठी रोटी खाते समय मन में निश्चय तो एक ही था कि तबला तो उस्ताद के पास ही सीखूंगा। इसके लिये कितना ही कठोर परिश्रम क्यों न करना पडे। यही गुरु का शिष्य पर प्रेम और शिष्य की गुरु के प्रति भक्ति भावना आज प्रो. सुधीरकुमारजी अमर कर गयी। फलतः सुधीरजी एक सिध्द हस्त कलाकार बने।

यहाँ गुरु के प्रति आदर और प्रेम तो था ही परंतु झुठ बोलना उतना ही सत्य था। अर्थात् उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब ने सुधीरजी को कसम खाने के लिये कहा कि "सिर पर हाथ रख कर कहो," मैं आजराड़े का तबला किसी को नही सिखाउंगा"। यह कसम कसम ही रह गयी। क्योंकि भगवान कृष्ण ने भगवद् गीता में कहा है कि अच्छे काम के लिये कभी झूठ बोलना पड़ा तो उसे पाप नही कहते। तभी सुधीरजी ने मन में कसम खायी की अजराड़ा घराने का तबला पूरे भारत वर्ष में सिखाउंगा। फलतः आज प्रो .सुधीरकुमारजी के कई शिष्य तैयार हुए और न केवल गुजरात में बसे है अपितु भारत वर्ष के प्रमुख शहरों में तथा विदेशों में भी बसे है।[७८]

---

७८ साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. २४-१२-२००५

२-९-१ अजराड़ा घराने का प्रथम संस्कार ।

प्रो .सुधीरकुमारजी का गंडाबंधन होने के बाद तबला सीखने की शुरुआत हुई। यह समय था ई.सन् १९४०। खाँ साहब सुधीरजी को तबला सिखाने के लिये उनके घर चले जाते थे। परंतु खाँ साहब की मुस्लीम बिरादरी के कुछ लोग उन पर नाराज थे, कारण केवल यही था की सुधीरजी एक हिंदु धर्म के कायस्थ ब्राह्मण थे। इस प्रकार का विचार सुधीरजी के मन में कभी नही आया क्योंकि लक्ष्य एक ही था। उस्ताद से अजराड़ा घराने का तबला प्राप्त करना। अपने पहले गुरु से मिली हुई शिक्षा को पहुँचाना यह बात इतनी आसान नहीं थी। अपितु जो गुरु ने कहा है केवल वही करना है। चाहे वह बात सच हो या झुठ हो, लक्ष्य तो एक ही था उस्ताद से तबला सीखना। उस्ताद भी कुछ कम नहीं थे। पहले तो दाँये, बाँये पर रखावट तथा हाथ की रखावट पर उस्ताद का ध्यान केंद्रित रहा। वर्तमान काल में गुरु से शिक्षा ग्रहण करना आसान है। परंतु उस कालमें आसान नहीं था। तबले की प्रारंभिक शिक्षा शुरु हुई, वह भी हाथ रखाव से। यदि शिष्य का हाथ सही है तो तबला चाहे किसी घराने का हो वह आसानी से बज पायेगा। इसीलिये उंगलियों पकड़ कर तबला सिखाने की शुरुआत हुई। ऊस्ताद के पास दिल्ली और अजराड़ा का तबला था ही, परंतु पूरब का

तबला उतनाही था। इसी कारण अजराड़ा घराने के कायदे की रचना से शुरु हुई तालीम। यहा शोधार्थी का खूब प्रयास रहा है कि वह पहली रचना कौनसी थी जिससे प्रो.सुधीरकुमारजी की तालीम शुरु हुई होगी। परंतु गुरुजीका अचानक देहावसान होने के कारण वह रचना नहीं प्राप्त कर सका। परंतु कई रचनाऐ गुरुजी के साक्षात्कार में पायी गयी, यानी सही तालीम लेते समय ही काफ़ी रचनाएँ प्राप्त हुई। ऐसी रचनाओं को संग्रहित कर पं.भातखंडे पध्दतिमें लिपिबद्ध कर अगले अध्याय में देने का प्रयास किया गया है।

२-९-२ निकास पर दृष्टि :

दिल्ली घराने का निकास एवं अजराड़ा घराने का निकास इस पर यदि दृष्टिपात करे तो काफ़ी फर्क़ दिखाई देता है। क्यों कि दिल्ली दो उंगलियों का बाज रहा है। उसकी तुलना में अजराड़ा में अनामिका का उपयोग किया गया है। इसी प्रकार उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ जब सुधीरजी को तालीम देते थे, तब उनके निकास पर दृष्टिपात करते थे। यदि दृष्टिपात करते समय कोई कमी पायी जाती। तो सुधीरजी का तबला अजराड़ा घराने का निकास का तबला नही होता। परंतु शिष्य को दी गयी रचनाएँ शिष्य के हाथ से सही निकास से निकल रही है या नहीं इस पर उस्ताद गौर से ध्यान देते थे।

फलतः घिडनग, धीनगीन, धीनधीनागीना आदि बोल सही निकल रहे हैं या नही इस पर भी विशेष ध्यान दिया करते। जब उस्ताद खुशमिजाज में हो। कभी कभी उस्ताद अपने रियाज़ में कुछ अलग निकास और शिष्य को सिखाते समय कुछ अलग ही निकास बताते थे। शोधार्थी को सुधीरजी ने अपने साक्षात्कार में एक बात और कही कि उस्ताद जब घर पर सिखाने आते थे जब सुधीरजी सोने का बहाना कर कहते थे कि आज मैं बहुत थक गया हूँ, "आप ही बजाइये"। और उस्ताद बजाते। तब कायदे का और बोलो का निकास कैसे करना चाहिये उसपर ध्यान देते थे। कभी उस्ताद कहते थे कि क्या यह कायदा आता है ? तब सुधीरजी "नही आता है"। ऐसा कहकर उसे दुबारा सुनकर लिख लेते थे। इसका फायदा यदि सही तौर से देखा जाय तो सुधीरजी को ही मिला और एक समय ऐसा आया कि खाँ साहब की बराबरी का सुधीरजी का वादन पेश होने लगा । यहाँ पर शोधार्थी यह कहना चाहता है कि खाँ साहब जाने अनजाने में शिष्य को आशीर्वाद देते थे कि (मियाँ जीते रहो, सुभान अललाह) इसका विपरीत परिणाम कई बार हुआ है कि वे शिष्य पर नाराज हो कर तालीम देना बंद कर देते थे और कहते थे अब तुम्हें मेरी जरुरत क्या है? सभी तो तुम्हारे पास है, क्यों आते हो? अब क्या कमी है? ये सारे उद्गार खाँ साहब करते थे।

२-९-३ दाये बाये पर उस्ताद का विशेष ध्यान :

दिल्ली घराने की अधिकतर रचनाएँ ऐसी पायी जाती है कि उन रचनाओं में दो या तीन मात्राओं तक का काल बाँया रहित मिलता है। अर्थात कुछ विद्वानों का इस पर यह विचार है कि उन दो,तीन मात्राओं के काल में बाँया सोता हुआ दिखाई देता है। शोधकर्ता ने अजराड़ा घराने की तालीम लेने पूर्व कुछ रचनाएँ अपने गुरु अर्थात सक्सेनाजी साहब से पायी और ऊपर दी हुई बातों की अनुभूति महसूस की। इस विचार पर प्रो सुधीरकुमार सक्सेनाजी से साक्षात्कार करते समय अर्थात चर्चा,विमर्श करते समय उनका भी मतंव्य यही रहा है। परंतु उसे त्रुटि न समझते हुऐ आपने इसपर अपने गुरु से मिली हुई बंदिशो पर विशेष अभ्यास करने के बाद इसकी अनुभूति हुई। कहने का तात्पर्य यह कि जब सुधीरजी को उनके उस्ताद से अजराड़ा घराने की रचनाएँ प्राप्त हुई तब उन्हें भी बाँये पर संतुलन लाने के लिये कष्ट करना पड़ा,अपितु इस बारे में आज की प्राप्त पुस्तको में से अधिकतर सभी पुस्तको के लेखकोंने इस पर अपने विचार प्रकाशित किये हैं। लेखक किसी रचनाओ को लिखने पूर्व उस के क्रियात्मक पक्ष पर अधिक विशेष ध्यान देते हुए अपने विचार प्रकाशित कर चुके है। सुधीरकुमारजी की तालीम उस्ताद के यहाँ रही थी तब उस्ताद को भी सुधीरकुमारजी के बजाने

पर त्रुटियाँ दिखाई देने लगी। इन त्रुटियों की और यदि सुधीरजी अपने वादन में विशेष ध्यान दे तो वे एक अच्छे अजराड़ा के तबला वादक बन सकते हैं। उस बात को तालीम देते समय उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ विशेष तौर से सुधीरकुमारजी की विशेष निगरानी रखते थे। रचनाओं के अंतर्गत जहाँ आवश्यक बाँया है वहाँ सही उंगली का प्रयोग करके बाँया बजाना तथा कहीं ऐसी रचनाऐं बजाते समय उन्हे महसूस हुआ कि यहाँ बाये की आवश्यकता नही है, क्यों कि वहाँ पर सुधीरकुमारजी का बाँये का प्रयोग होता था। इन सभी बातों को ध्यान में रखकर अपने शिष्य की त्रुटियाँ दूर की। फलतः यदि हम इसकी अनुभूति करने का प्रयास करें तो आज प्रो सुधीरकुमारजी के वादन का ध्वनि मुद्रण है उस में इस बात की पुष्टि होती है। अर्थात दाँये बाँये का संतुलन सही निकास होने के कारण फलक का तबला स्पष्ट सुनाई देता है। इस बात को प्रो. सुधीरकुमारजी से चर्चा करते समय वे भी कहते थे कि मैं किसी भी रचनाको बजाऊँ और रचना बजाते समय मेरे हाथ में यदि दाँये बाँये का संतुलन दिखाई देता है तो इसका पूर्ण श्रेय मेरे ऊस्ताद को जाता है।

२-९-४ तबले की तालीम प्राप्त करने हेतु कठोर तपश्चर्या :

इस से पूर्व गंडाबंधन के विधि में हम देख चुके है कि जब गंडाबंधन के दिन अपने उस्ताद की पूरी बिरादरी को दावत देना और खुद उस्ताद के साथ उनके घर जा कर एक ही थाली में परोसा गया झुठा भोजन खाना यह एक महान तपश्चर्या थी। यदि उस समय प्रो.सक्सेनाजी उस्ताद पर नाराज होते और केवल अपने हिन्दु धर्म का पालन करते तो वे आज तक अजराड़ा घराने के सिध्दहस्त कलाकार नहीं बन पाते। परंतु हिन्दु ब्राह्मण कुल में माँस,मटन व्यर्ज है, इसकी जानकारी उनको थी परन्तु सिर्फ तबला सीखना इतना ही लक्ष्य था इसके लिये अपने संस्कार एवं अन्य सामाजिक विचारों का त्याग कर उस्ताद के साथ एक थाली में माँसाहार एवं झुठी रोटी ही क्यों खायी? इसका एक ही कारण सिर्फ ,अजराड़ा घराना का तबला सीखना यही एक उद्देश्य था इसी बात पर उन्होने विशेष ध्यान दिया यही उनकी महानता थी। इस प्रकार के कई किस्से हैं की जो सुधीरकुमारजी से साक्षात्कार करते समय मिले उसे शोधकर्ता द्वारा देने का प्रयास किया गया है। प्रो.सुधीरकुमारजी के साथ इस विषय पर कई बार साक्षात्कार हुआ है परंतु हर बार कुछ नयी चीजें सुनने मिलती उसी में से एक किस्सा देने का प्रयास कर रहा हूँ।

उस्ताद के पास तबला सिखते समय उनकी मुस्लिम बिरादरी सुधीरजी पर नाराज थी। परंतु उस पर विशेष ध्यान गुरुजी ने नहीं दिया। कभी कभी अपनी बिरादरी का सुनकर उस्ताद नाराज हो जाते और सुधीरजी को तालीम देना बंद कर देते थे। परंतु उस्ताद नाराज क्यों हुए उसपर विचार करते थे आज नही तो कल ही सही मानकर अपना काम उनसे निकलवा लेते थे। कई बार ऐसा भी हुआ की "सुधीरबाबु" उपनाम उनको उस्ताद ने दिया था। कभी कभी ऐसें क्षण भी आते थे जब तालीम लेने हेतु से घर जाय तो उस्ताद, "अबे कौन है"? कहकर बहार निकाल देते थे। इस बात पर नाराज न होते हुए मन में संयम रखकर फिरसे तालीम लेना शुरु कर देते। कई बार ऐसा भी हुआ कि जब बिरादरी सोती थी तब वे सुधीरजी के घर तालीम देने जाते थे। यह समय सुबह चार बजे का होता था। प्रो. सुधीरजी को कॉलेज की शिक्षा चालु होने से आमदनी कम थी। परंतु उसी में से अपना ख्याल रखना, साथ साथ उस्ताद का भी ख्याल रखना पडता था। एक दिन कुछ अजीब सी घटना बनी। सुधीरजी ने आमदनी मे से कुछ पैसे को बचाकर दो पायजामें सिलवाये थे और वह भी अपने कद के हिसाब से सिलवाये थे। एक दिन उस्ताद सिखाने के लिये घर आये और उनका ध्यान उन पायजामें पर गया और तुरंत उन्हों ने वे पायजामें अपने लिये मांग लिये। जब कि पायजामें

का कद छोटा था और उस बात को तो उस्ताद भी जानते थे। परंतु किसी नयी चीज को लेना ही उनका लक्ष्य था। केवल पायजामें को लीये ही नही, किंतु उसपर अलग रंग का कपडा लगवाकर जोड़ लगवा दिया। यहाँ पर एक बात स्पष्ट होती है कि सुधीरजी ने अपने कठिन परिश्रम से बचाये हुए पैसों में से बनाये पायजामें केवल "गुरु आज्ञा ही केवलं" की दृष्टि से दोनों पायजामें दे दिये। यह एक परीक्षा थी ऐसा मानकर, तपश्चर्या समझ कर चुपचाप बैठे रहे।

उस्ताद कई बार बड़ौदा में सुधीरजी के घर आते थे। उसी समय का एक किस्सा यह भी है कि उस्ताद को परीक्षा लेने हेतु महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी म्युजीक कॉलेज में आमंत्रित किया गया। लगातार तीन दिन तक परीक्षा रखने का कार्य निश्चित किया गया, जब कि यहाँ पर उस्ताद किसी बात पर न समझते हुए "परीक्षा कार्य तुम ही संभालो। हम से अच्छा कौन हो सकता है? और मुझ से बढ़कर थोडे ये होंगे", यह कहकर चल पडे। इस तरह से एन मौके पर उस्ताद अनाकानी करे और उस समय इस तरह की समस्या का हल करना और उनको मनाकर वापिस परीक्षक के हिसाब से परीक्षा लेने के लिये बिठाना, ऐसा काम करना यह भी एक कठिन तपश्चर्या है। ऐसा शोधार्थी को लगता है।

प्रो .सुधीरकुमारजी सक्सेनाजी से साक्षात्कार करते समय यह बात शोधार्थी को सुनने मिली थी कि उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब झूठ बोलने में माहिर थे। परंतु इस में उनका कोई खराब दृष्टिकोण नहीं होता था। इसी प्रकार सुधीरकुमारजी की निरंतर श्रध्दा पूर्वक तालीम में उस्ताद उनको सदैव कहते कि यह सारी रचनाएँ तो मैने तुम्हें सिखायी हैं, फिर तालिम लेने की जरुरत क्या है? या कभी कभी किसी की बातों में आकर तालीम देना अचानक ही बंद कर देते थे। परंतु सुधीरजी इसे अच्छी तरह से जान गये थे कि यह उनके मन की बात नही है। किसी ने उनको बहलाया होगा और अपने उस्ताद लोगों की बातोंपर अधिकतर ध्यान देते हैं। अर्थात अपने मन पर संयम रखते हुए कभी कभी दो दिनो के बाद उनको समझाने के लिये जाते थे। फिर उस्ताद द्वारा सच्चाई बाहर आती थी। सुधीरजी उस्ताद को कहते थे कि क्या उस्ताद, आप भी किसी की बात सुनते हो और मुझे तालिम देना बंद करते हो ? मै तो आपका शिष्य हूं। आप मुझे नही सिखाओंगे तो कौन सिखायेगा ? तालीम लेते समय ऐसी तपश्चर्या करनी पडती थी।

उस्ताद को शराब पीने की आदत थी। एक समय ऐसा था कि शराब बिना उनका जीना असंभव था। एक बार सुधीरजी ने बडौदा बुलाया और कॉलेज के संगीत सभा में उनका कार्यक्रम रखा। उस्ताद दो दिन पहले

प्रो. सुधीरकुमारजी के घर पहूँच गये। और सुधीरकुमार कायस्थ ब्राह्मण होने के कारण शराब पीना उन्हें वर्जित था और दो दिन तक शिष्य के घर शराब न मिलने के कारण उस्तादजी का शरीर और मन विचलित होने लगा। वह समय था १९५७ का। कार्यक्रम का दिन आ गया और वह भी कला संकाय में कार्यक्रम शाम का रखा गया था। उस्ताद तो आ गये, किंतु शराब न मिलने पर बिना बोतल के उस्ताद मंच पर तो आ गये किंतु उनसे कुछ नही बज रहा था। उस्ताद की आँख में भी पानी आ गया और शिष्य के आँख में भी पानी। दोनो को एक दूसरे की दया आयी, आखिर सक्सेना साहब ने मंच पर जा कर घोषित किया की, आज उस्ताद का तबला वादन नहीं होगा और यही तबला वादन कल होगा। दूसरे दिन अपने घर के सभी नियमों को तोड़कर अपने गुरु के लिये एक बोतल का प्रबंध कर ही दिया तो दूसरे दिन शराब मिलने पर उस्ताद एकदम तैयार और अजराड़ा घराने का शुध्द फलक का तबला सुनाया, लोग सिर्फ "वाह उस्ताद वाह" का नारा लगाते रहे। शोधार्थी का कहना सिर्फ इतना ही है की सुधीरजी की यह बड़ी कठोर तपश्चर्या थी। एक और अपनी तालिम तो दुसरी और ऊस्ताद के प्रति दया, और घर के नियम, अपितु इस तरह की सीखने के लिये सभी कष्ट

सहन करुंगा, क्यों की मुझे तो सिर्फ तबलाही प्राप्त करना है बाकी सब गौण है।

स्वतंत्रता के ७,८ साल के बाद कानपुर के श्री महेश्वरी दयालजी ने एक संगीत समारोह का आयोजन किया था। उस समारोह में सुधीरकुमारजी का तबला वादन के कार्यक्रम का आयोजन किया था। उस कार्यक्रम में उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ साहब को जानबूझकर पीछे की ओर बिठाया था। जब सुधीरजी का तबला वादन चल रहा था उस में सुधीरजी अपने गुरु से मिली हुई विद्या का पूर्ण रुप से अभ्यास कर तथा तपशर्या करने के बाद अपना वादन पेश किया था। अजराड़ा की हर बंदिश को मंजिल पर बजाने में सफल कलाकार रहे थे शोधार्थी का कहने का तात्पर्य इतना ही है की खाँ साहब सुधीरजी पर या तो खुब खुश हो या नाराज हो कर उन्हे तालिम देना बंद कर दे, परंतु इस प्रकार कुछ नही हुआ खा साहब ने पीछे बैठकर इतना तो जरुर सोचाहोगा की अपना चेला अब काफी तैयार हो चुका है इसे आगे की तालिम देने में कोई मतलब नहीं है। केवल इस बात को अपने मन में ठान कर दूसरे दिन से ही सुधीरजी के उपर नाराज हो गये सुधीरकुमारजी तालिम लेने हेतु उस्ताद के घर पहुँचे तो उस्ताद ने ताना दिया मियां अब तुम्हे तालिम की क्या जरुरत है अब मेरे पास क्यों आये हो? आप तो अपने

उस्ताद के समान तैयार बजाते हो, सुधीरजी इस बात पर चिंतित हुए और कहने लगे की क्या उस्ताद आप भी छोटी बात पर नाराज हो जाते हो, शिष्य कितना भी तैयार बजाने लगे लेकिन शिष्य तो शिष्य ही होता है और उस्ताद उस्ताद ही होता है। यदि सुधीरजी अपने उस्ताद का कहना मान लेते तो उनको आगे की तालिम नही मिलती परंतु उस्ताद को समझाकर उनकी नाराजगी दुर कर अपनी आगे की तालिम लेना शुरु किया।

२-९-५ सुधीरजी का अजराड़ा घराने में आगमन तथा घराने प्रति विशेष ध्यान

उस्ताद हबीबुद्दीन खाँ से गंडाबंध शागिर्द बनने के बाद ही उनका अजराड़ा घराने में आगमन हुआ एसा शोधार्थी का कहना है क्यों कि इससे पूर्व ऊस्ताद बुन्दु खाँ साहब से तालिम प्राप्त करते थे परंतु उनकी कुछ सीमा बंधी हुई थी। उस्ताद बुंदु खाँ के पास दिल्ली घराने की कुछ ही रचनाएं थी सुधीरजी ने उसे आत्मसात कर लिया था परंतु आगे की तालीम लेने हेतु आप उस्ताद हबीबुद्दीनखाँ के शागिर्द हुए और उनकी निरंतर सेवा चलती रही।

एक तरफ उस्ताद के सामने झूटी खाइ हुई झूठी कसम, तो दुसरी और अजराड़ा घराने का भविष्य उन को दिखाइ दे रहा था। किंतु उस समय हबीबुद्दीन खाँ साहब को कोई शागिर्द औ ना कोई पुत्र था। जो कोई

अजराड़ा घराने का प्रचार प्रसार कर सके, इस के लिये अजराड़ा घराने की जिम्मेदारी अपने कंधे पर है यह सोचकर मन मे ठान लिया कि मेरा घराना तो सिर्फ अजराड़ा ही है और संगीत जगत में तो मुझे अजराड़ा घराने का ही काम करना है इसके लिये स्वाभाविक रुप से सुधीरजी का विशेष ध्यान अजराड़ा घराने पर ही रहा है। इस में कोई संदेह नही एसा शोधार्थी को लगता है।

---

७९ साक्षात्कार प्रों सुधिरकुमार सक्सेनाजी दि. ३०-१२-२००५, १०-१-२००६, २४-१-२००६, ३-२-२००६

SUDHIR KUMAR SAXENA

A PROFILE

PERSONAL

- Born on 5th July 1923 at Aligarh (U.P)
- Residing at :

> "VISHWAS"
> 1st floor, Opp. Manepatils Bungalow
> Bhanuben Azad Marg, Shiya Baug
> Vadodara – 390 001

- Phone (0265) 431022 (Res.)
- Domicile – Vadodara, (Gujarat) India

- Bachelor of Arts, 1944 of Meerut University with English Literature, Philosophy and Political Science.
- A disciple of Late Shri Habiduddin Khan of Ajarada Gharana, Meerut (UP)

EMPLOYMENT

- Faculty of performing Arts, M.S.University, Vadodara since 1959 and retired as Professor and Head, Department of Music (Instrumental) in 1983.
- Staff Artist with AIR, Kolkata & Delhi from 1945 to 1948.

ACHIEVEMENTS

- Directly exempted 'A' Class artist of AIR (without formal audition).
- Member jury of Music Audition Board, AIR, Delhi, the Local AIR for auditions, competitions, employment selection etc. as an expert, and Member of the Expert Committee, University Grants Commission, Delhi for award of Research Fellowships in Music and Dance
- Examiner for Ph.D. Students of different Universities and an examiner and paper setter of Post Graduate Examinations for the Music Institutions/Universities around the Country

..2

- Dr. (Smt.) Loveli Sharma, Lecturer in Sitar at the Dayal Bagh, Agra, Shri K.K.Verma, of Indira Kala Music, University, Khairagarh (M.P), Shri Purandare, of Faculty of Performing Arts, M.S.University, Vadodara, and Kum. Preeti Nigam of Bhopal (M.P) have successfully pursued and submitted their thesis works for the award of Ph.D. degree under my guidance.

- Published and associated in publication of articles on 'Art of Tabla Playing', 'Ajrada Gharana of Tabla', 'Aesthetics of Rhythm', etc.

- My talk on 'Appreciation of Tabla' was recorded by AIR, Vadodara which was translated in different Indian Languages and was broadcast all over India. It is presently preserved at the AIR's Archives at Delhi.

- Given reviews as an expert, on the following books :

- The Tabla of Lucknow', a cultural analysis of a musical tradition by Mr. James Kippen for Cambridge Studies in Ethnomusicology, U.K.

- 'The major Traditions of North Indian Tabla Drumming', a survey presentation based on performances by India's leading artists – compiled and notated by Mr. Robert S. Gottlieb, Germany.

- 'Pakhwaj Aur Tabla Ke Gharane Evam Paramparayen', a scientific Historical Research Volume by Dr. (Smt.) Aban E. Mistry, Mumbai (India).

- Visited Afghanistan, Georgia and USSR in 1962 for lecture–demonstration on invitation as a cultural delegate and sponsored by the Ministry of Cultural Affairs and Scientific Research, Govt. of India, New Delhi

- Visited Mauritius for lecture – demonstration in 1985 on invitation of Mahatma Gandhi Institute, and again in 1992 for special training of the teaching faculty at the Institute.

- Scores of students trained by me have been well placed, professionally and also recognised as renowned artists in their own right not only in Gujarat, but also all over India and even abroad. To name a few –

    - Two senior most disciples – Late Shri Ganpatrao Ghodke was Reader in Tabla at Faculty of Performing Arts, M.S.University,Vadodara and Late Shri P.P.Bhorwani, was working as a Lecturer at Saurashtra Sangeet Academy at Rajkot, Gujarat.

    - Shri Kaluram Barot, an AIR artist and a retd. Lecturer at Faculty of Performing Arts, MSU, Varodara.

- Shri Madhukar Gurav is an 'A' Class AIR artist and working as a Reader and Head-Department Of Tabla, at the Faculty of Performing Arts, M.S.University, Vadodara. He has also won All India Radio competition in Tabla.

- Sarvashri Shridhar Pushkar, Chandrakant Bhonsale, Ajay Ashtaputre, Anil Gandhi and Chandrashekar Pendse are employed as lecturers at the Faculty of Performing Arts, M.S.University, Vadodara and all of them are AIR artists

- Shri Ravindra Nikte is a permanent staff artist at AIR, Vadodara.

- Shri Vikram Patil is permanently performing for Pt. Ravi Shaknerji's orchestra and has toured Russia and several other Countries. He is an approved 'A' Category artist in Film Industry.

- Shri Dhirubhai Prajapati of Mumbai is professionally established Tabla player and an approved AIR artist. He runs a 'School of Tabla' and has toured all over the World.

- Shri Khadim Hussain is a permanent staff aritst at AIR. Mumbai.

- Shri Umesh Mehta is conducting the 'Ajarada School of Tabla', at Ahmedabad and is also an AIR artist.

- Shri Divyang Vakil, runs a school of music "Rhythm Riders" at Ahmedabad and has played at various concerts.

- Shri Ramesh Bapodara is an AIR artist and is employed as a lecturer at the 'Kadam School of Kathak Dance'. He has professionally toured abroad a number of times.

- Shri Devendra Dave is a lecturer at Saurashtra Sangeet, Natak Academy, Rajkot, and an AIR artist.

- Shri I.D.Deerpaul is employed at the Mahatma Gandhi Institute, Mauritius as Head, Department of Music.

- Shri Deonandan Deerpaul and Prabhunath are working as Lecturers at M.G. Institute, Mauritius.

- Shri Subhash Dhunoochand of Re-Union Island/Mauritius is an accomplished tabla player and widely traveled all over the world.

- Shri Kazi Yuki Funatsu is a Professor of Indian Culture at Shinshu University, Tokyo – Japan.

Innumerable solo performances and Tabla accompaniment at Music Conference all over India. Accompanied renowned artists like:

INSTRUMENTALISTS

- Late Ustad Allauddin Khan (Sarod), Pt. Ravishankar (Sitar) Ustad Ali Akbar Khan (Sarod), Ustad Vilayat Khan (Sitar) Ustad Abdul Halim Zafarkhan (Sitar), Late Shri Nikhil Banerjee (Sitar), Late Shri Radhika Mohan Moitra (Sarod), Shri Shyam Ganguli (Sarod), Late Ustad Mushtaq Ali Khan (Sitar), Late Ustad Ghulam Sabirkhan (Sarangi), Pt. Ram Narain (Sarangi), Ustad Sagiruddin Khan (Sarangi), Pt. Hariprasad Chaurasia (Plute), Late Shri Gajanan Joshi (Violin), Pt. V.G. Jog (Violin), Dr. N. Rajam (violin), Shri D. K. Datar (Violin), Late Ustad Abdul Aziz Khan (Been), Late Ustad Hafiz Alikhan (Sarod).

VOCALISTS

- Late Ustad Bahre Wahid Khan, Late Ustad Faiyazkhan, Late Ustad Amir Khan, Late Ustad Vilayat Hussain Khan, Late Ustad Bade Ghulam Ali Khan, Ustad Nazakat Ali – Salamat Ali Khan (Pakistan), Late Pt. Omkar Nath Thakur, Pt. Jasraj, Ustad Nissar Hussain Khan, Late Siddheshwaridevi, Late Rasoolanbai, Late Begam Akhtar, Late Ustad Rahimuddin Khan Dagar.

DANCERS

- Late Sarvashri Acchan Maharaj and Shambhu Maharaj, Late Sarvashri Chiranjilal, Mohanlal and Narainprasadji, Smt. Damyanti Joshi, Smt. Roshankumari.

AWARDS

- Gaurav Puraskar by the Sangeet Nritrya Natya Academy, Government Of Gujarat in 1983, for outstanding services in propagating and popularising music in Gujarat state.
- Sharangdev Puraskar in 1992 from Sur Singar Sansad of Bombay for distinguished services in the field of Music.
- By TRIVENI a renowned cultural Institute of Vadodara for excellent contributions in Music field on the eve of World Theatre Day.

XXXXXXXX